University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

बिहार की हिन्दी पत्रकारिता में अभिव्यक्त दलित विमर्श का स्वरूपः एक अध्ययन

राजू बैठा

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

हम इस कस्बे में दूध का स्वाद भला कैसे चख सकते हैं जहाँ पर विष वृक्षो को रोपा जाता है? दुश्मन किसी और चीज को नहीं, बल्कि दुश्मनी को न्योता देते हैं। हम दोस्ती का जाम कैसे साझा कर सकते है? मैं इस कस्बे को अपने कस्बे के रूप में कैसे जान सकता हूँ जहाँ हर दिन मजदूरों का कत्ल किया जाता है। रास्ते में उजियारा करने के लिए दीपक कैसे जला सकता हूँ समय के इस मोड़ पर जहाँझोपड़ियों में आग लगाई जा रही है। वे सभी आस्थाहीनता के परिणामों में शामिल होते हैं। मैं ऐसे लोगों के समूह में कैसे शामिल हो सकता हूँ?

समय के इस मोड़ पर भी झोपडियों में आग लगाई जा रही है। लोगों को पीड़ित एवं दमित किया जा रहा है। यह पूरे देश का सच और बिहार का भी सच है। हालॉकि यह बहुत ही क्रूर सच है लेकिन बाजारवादी मीडिया इस समय को फिल्मी सितारों, राजनीतिक धन्धेबाजों के फालतू गपशप, क्रिकेट, अध्यात्म तथा फैशन को अभिव्यक्त करती पत्रकारिता नहीं समझा सकती। वह इसे व्यक्त भी नहीं कर सकती। कारण यह है कि पत्रकारिता की दुनिया मध्यवर्गीय संस्कारों एवं सरोकारों की दुनिया है और सच यह है कि मध्य वर्ग अपने घरों से निकलता है दफतर जाता है। पुनः घर आकर टेलीविजन के दैनन्दिन दुनिया में खो जाता है। उसे गॉव में एक दलित के साथ हो रहे अत्याचार से बहुत मतलब नहीं होता है। गॉव में दलित की अधीनता और उस अधीनता से जुड़ी पीड़ा प्रायः पत्रकारिता की निगाह में आती ही नहीं। आते भी कैसे उसकी संवेदना तंतुओं को उसकी अनदेखी करने या उसे महसूस न करने के लिए ही बनाया जाता है।

उसमें भी बिहार की पत्रकारिता विशेष रूप से दलित मुद्दों को लेकर असंवेदनशील है। चन्द दलित नेताओं की तंज भरी मजबूरी में की गई कवरेज के अलावा दशरथ मॉझी जैसे न जाने कितने गरीब, दलित अखबार के पृष्ठों में कभी स्थान नहीं बना पाये।

(क) सामाजिक परिप्रेक्ष्यः

बिहार का समाज सामन्ती समाज है। सामन्ती समाज की युगों से चली आ रही जकड़बंदियॉ बहुत ही प्रचंड रूप से आधुनिक युग में इसमे और अधिक जटिल रूप धारण कर लिया है। पुराने सामन्तों के साथ मध्यवर्गी जातियों के नये सामन्त भी जुड़ गये हैं इससे स्थिति और गंभीर हो गयी। स्थिति की गंभीरता गॉव देहात में रह रहे दलितों पर विशेष भारी है। बिहार का दलित आय दिन इस यथार्थ को झेलता है।

समाजिक न्याय के कारण परिवर्तन आया। लेकिन इस परिवर्तन का लाभ दलितों को ठीक से नही हासिल हुआ। मध्यवर्गी जातियों जैसे यादव, कुर्मी और कोईरी कुशवाहा आदि का सशक्तिकरण होता है। लेकिन दलितों की स्थिति में बहुत कम बदलाव आ पाता है। सामाजिक दृष्टि से देखा जाय तो ''बिहार में दलित खेत मजदूर बड़े पैमाने पर बन्धुआ प्रथा की जंजीर मे बॅधे रहे हैं।

दलित खेत–मजदूरों को आर्थिक शोषण के साथ–साथ जघन्य सामंतों उत्पीडन का शिकार भी होना पड़ा रहा था। सीधे तन कर चलना, साफ धोती पहनना और जमींदारों के सामने खटिया पर बैठना नामुमकिन था। 20वीं सदी के शुरूआत में ही शाहाबाद के इलाके (आज भोजपुर और रोहतास जिले) में सामंतों ने अपनी मर्जी चला रखी थी। जमींदार उनके कारिन्दों और

लठैतों द्वारा बलात्कार करना नीच जाति के औरतों के इन यौन शोषण ने खेतिहर मजदूर को आन्दोलन में इज्जत की लड़ाई का आयाम जोड़ा। खेतिहर मजदूरों को आत्मसम्मान और गरिमा के प्रश्न पर कई तरह की शिकायतें थी।

बिहार की हिन्दी पत्रकारिता में दलितों से जुडी खबरें है, उनमें से अधिकांश हिस्सा उनके खिलाफ हिंसा का ही है। फरवरी 2015 मे दैनिक हिन्दुस्तान ने बिहार के गोपालगंज में टूटा दबंगों का कहर, सात को पीटा।[2] इस खबर के मुताबिक अपने आशियाने को बचाने गए एक ही परिवार के सात दलितों पर गॉव के ही दबंगो ने लाठी–दण्डा, तलवार–फरसा और चाकू से हमलाकर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया।[3] घायलों ने बताया कि गाँव के कुछ दबंग लोगों ने उनकी जमीन पर कब्जा कर लिया था। पंचायती और जमीन की नापी कराने के बाद उनका जमीन पाया गया तो गुस्साए दबंगों ने उनकी झोपडी उजाड़नी शुरू कर दी। 'राष्ट्रीय सहारा' ने इसी तरह से खबर छापी कि जितेन्द्र राम ने अपने नाबालिग पुत्री के अपहरण के मामले में थाने में प्राथमिक दर्ज करायी है। यहॉ गौर करने की बात है कि यह अपहरण किसी सवर्ण की पुत्री का होता तो नाम जहाँ छापा जाता है। उनके पीछे पत्रकार एवं पत्रकारिता की मानसिकता झलकती है।

13 जनवरी 2013 के दैनिक हिन्दुस्तान में सर गणेश दत्त के बहाने दलितों की बिहार में दशा एव दिशा पर विस्तृत चर्चा की गयी है। इसमें बहुत ही व्यवस्थित ढंग से बिहार में दलितों की सामाजिक दशा का विवेचन है। दैनिक हिन्दुस्तान के पटना संस्करण के एक स्तंभ में रामकुमार निराला लिखते है कि ''दलित समस्या पर आज भले ही दलित चिन्तक उग्र ढंग से अपने विचार रख रहे हों, और दलित सुधार एवं दलित चिन्तन का सारा श्रेय लेने जाना चाहते हो, लेकिन हकीकत यह है कि दलित समस्या पर प्राचीन काल से ही सवर्ण और दलितों का मानवतावादी चिन्तन दलितों को संवेदनात्मक धरातल पर अपनाने के लिए मानस तैयार करने का काम करता रहा है।

अवश्घोष हो, सरहप्पा, रवीन्द्र नाथ टैगोर हो, या महात्मा गॉधी ये दलितों के प्रति सिर्फ सहानुभूति नहीं रखते थे बल्कि दलितों के प्रति अमानवीय व्यवहार का विरोध भी करते रहे। उन्होने हमेशा चाहा कि दलित हिन्दू धर्म की अन्तरवर्ती धारा के साथ बहें और समानता का मानवीय हक अर्जित करें। इसी क्रम में बीसवी शताब्दी में सर गणेश दत सिंह ने भारत की संवैधानिक संस्थाओं में दलितों के प्रतिनिधित्व दलित शिक्षा और स्वावलंबन पर जोर देकर दलितोद्धार की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। सर गणेशदत्त द्वारा 31 जनवरी 1992 को दलित समस्या पर बिहार और उडीसा विधान मंडल में दिया गया व्याख्यान आँख खोलने वाला है। यह व्याख्यान सिद्ध कर देता है कि भीमराव अंबेडकर एकमात्र दलित चिन्तक नहीं है। जिन्होंने विभिन्न राजनीतिक संवैधानिक संस्थाओं में दलितों के आनुपातिक प्रतिनिधित्व की बात की हो। सर गणेशदत का मानना था कि शैक्षणिक उत्थान से कालान्तर में ऐसे धरातल उपस्थित होंगे जहाँ दलित समुदाय प्रत्येक हिन्दू को आमने सामने खडे हो सकेंगे और यह कह सकेगें कि कोई जन्म के आधार पर बडा नहीं होता, बल्कि शिक्षा और योग्यता द्वारा मनुष्य देश का श्रेष्ठ नागरिक बनता है। सर गणेशदत ने दलित छात्रों को मुख्य धारा में लेने हेतु उच्च एवं तकनीकी शिक्षा की प्राप्ति के लिए छात्रवृति की भी व्यवस्था अपने वेतन से की थी। वे शिक्षा के माध्यम से दलितों को स्वावलंबी बनाना चाहते थे।

सर गणेशदत ने भंगी प्रथा का भी विरोध सदन में किया था। विधान मंडल में उन्होने जिस मार्मिक घटना का वर्णन किया है वह दलितों की दुर्दशा के संबंध में काफी कुछ कह जाता है। जिस पर

मैला होने की प्रथा से वह इतने दुखित हुए कि दलितों के जीवन स्तर में मूलभूत सुधार लाने का दृढ संकल्प लेते है और इस दिशा में सीमित संसाधनों के बावजूद उनके द्वारा भंगी मुक्ति के लिए जो कार्य किया गया वह अद्वितीय है। उनका मानना था कि दलित वर्ग, जो अभिजात्य वर्ग के लिए सारी सुविधा मुहैया कराता है स्वयं उपेक्षा अपमान एवं तिरस्कार का दंश आजीवन झेलता है। उनका यह भी कहना था कि प्रायः उस जमाने में दलितों को भरपेट भोजन भी नसीब नहीं होता था।[4] इसी स्तंभ के दूसरे लेखक डॉ सिद्धेश्वर सिह लिखते हैं कि ''महामानव सर गणेशदत सिंह का जन्म जमींदार परिवार में हुआ था लेकिन दलितों को हित के लिए उन्होने कार्य किया। उन्होने मैला ढोने की अमानवीय प्रथा को कानून बनाकर रोकने का प्रयास किया था। उनकी स्थिति सुधारने की दिशा में उन्होने बहुत सारे कार्य किये। विद्यार्थियों की छात्रवृति देने में वेदलितों को प्राथमिकता देने में कृतसंकल्पित रहे।[5]

सर्वविदित है कि समाचार की अपनी पक्षधारता होती है। वे जितने निष्पक्ष और निर्दोष लिखते हैं उतने होते नहीं है। इसलिए कहने को तो यह कहा जा सकता है कि खबर खबर होती। दलित राजनीति के कछावर नेताओं के प्रतिप्रेक्ष्य में न्यूज चैनल ने अच्छा विवेचन किया था।[6]

वैसे सच है कि आजादी के इतने वर्षो बाद भी बिहार जैसे राज्य में जाति का समीकरण सर्व व्याप्त है। यह सही है कि आरक्षण के जरिए नौकरियों मे दलितों का प्रतिनिधित्व है लेकिन मीडिया में दलित अनुपस्थित है। कुछ वर्ष पूर्व बिहार के एक दैनिक पत्र के संपादक के जाति–प्रेम को लेकर एक पत्रिका ने खबर छाप दी थी कि किस तरह से संपादक ने प्रशिक्षु पत्राकारों में सवर्ण जाति के पत्रकारों को छोडकर दलित और पिछड़े पत्रकारों को निकाल दिया था। जबकि उनके से कई ऐसे पत्रकार थे जो सवर्ण जाति के पत्रकारों से बेहतर थे। मीडिया के क्षेत्र में सक्रिय लोग जानते है कि जब कोई नया संपादक पत्र–पत्रिका में आता है तो अपने साथ कुछ नया पत्रकारों को लाता है और यह उनके जाति पर निर्भर करता है। इसलिए सच्चाई यही है कि आज भी मीडिया पर सवर्णो का कब्जा है और फैसला लेने का अधिकार भी।[7]

बिहार की हिन्दी पत्रकारिता में दलित अधिकारों की खबरों के प्रकाशन का अभाव ही दीखता है। मीडिया पर समान्ती जातियों का वर्चश्व आज भी विद्यमान है।

सन्दर्भ सूची

1. चारूदत्त भागवत, (अनूदित) कविता भाई पंचभाई 'विषाक्तज रोटी' पुस्तक राम पुनियानी सामाजिक न्यायः एक सचित्र परिचय पृ सं0–49
2. दैनिक हिन्दुस्तान, 11 फरवरी 2015
3. वही,
4. दैनिक हिन्दुस्तान, संपादकीय स्तंभ, 13 फरवरी–2013
5. सिद्धेश्वरी सिन्हा, दैनिक हिन्दुस्तान, 13 फरवरी 2013
6. खुशदीप सहगल, लेख जनसत्ता, 26 अप्रैल 2014
7. वही 26 अप्रैल 2014
8. आज तक न्यूज चैनल, 26 सितंबर 2014
9. श्योराज सिंह बेचैन एंव एस–एस. गौतम, सामाजिक मीडिया और दलित पृ सं–96